सब्त का दिन

ओवन आॅल्ब्रट

"सब्त" शब्द इब्रानी भाषा के *शब्बथ* और यूनानी के *शब्बतोन* से लिया गया है, जिसका अर्थ है "बन्द करना, रुकना, और विश्राम करना।" "सब्त" मूसा के समय से इस्राएलियों द्वारा मनाए जाने वाले विश्राम के विशेष दिनों को कहा जाता था। प्रत्येक सप्ताह आने वाले सब्त में हमारे समय के अनुसार शुक्रवार शाम 6 बजे से शनिवार शाम 6 बजे तक विश्राम करना होता था। "सब्त" शब्द पहली बार निर्गमन 16:23 में मिलता है (हिन्दी की बाइबल में विश्राम दिन है), परन्तु उत्पत्ति में इसका इस्तेमाल किसी भी तरह सातवें दिन के विश्राम के सम्बन्ध में नहीं किया गया।

यहूदी लोग न केवल साप्ताहिक सब्त ही मनाते थे बल्कि वे विशेष सब्त, जैसे कि प्रायश्चित का दिन (लैव्यव्यवस्था 16:29–31; 23:27–32) मनाते थे, और उन्हें प्रत्येक सातवां वर्ष सब्त वर्ष के रूप में मनाने की आज्ञा थी (निर्गमन 23:10, 11; लैव्यव्यवस्था 25:1–7; व्यवस्थाविवरण 15:1–11)। अन्य अवसरों को सब्त के दिन तो नहीं कहा जाता था, परन्तु उन्हें काम न करने की आज्ञा से ही, फसह के पहले और सातवें दिनों में (गिनती 28:18); अठवारों के पर्व के पहले दिन, जिसे उपज और पिन्तेकुस्त का पर्व भी कहा जाता था (लैव्यव्यवस्था 23:21; गिनती 28:26); तुरहियों के पर्व के दौरान (लैव्यव्यवस्था 23:24, 25; गिनती 29:1, 7, 12, 35); और झोंपड़ियों के पर्व के दौरान (लैव्यव्यवस्था 23:35, 36) अलग किया जाता था।

केवल उत्पत्ति 2:3 में ही सातवें दिन के विश्राम की बात मिलती है: "और परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दी और पवित्र ठहराया; क्योंकि उसमें उसने अपनी सृष्टि की रचना के सारे काम से विश्राम लिया"। परमेश्वर के लोगों के लिए सब्त के दिन की आज्ञा कई वर्षों बाद दी गई थी। नहेमायाह ने कहा था:

> फिर तू ने सीनै पर्वत पर उतरकर आकाश में से उनके साथ बातें की, और उनको सीधे नियम, सच्ची व्यवस्था, और अच्छी विधियां, और आज्ञाएं दीं। और उन्हें अपने पवित्र विश्रामदिन का ज्ञान दिया, और अपने दास मूसा के द्वारा आज्ञाएं और विधियां और व्यवस्था दी (नहेमायाह 9:13, 14)।

यहेजकेल ने लिखा था:

> ''मैं उनको मिस्र देश से निकालकर जंगल में ले आया। वहां उनको मैंने अपनी विधियां बताईं और नियम भी बताए कि जो मुनष्य उनको माने, वह उनके कारण जीवित रहेगा। फिर मैंने उनके लिए अपने विश्राम दिन ठहराए जो मेरे और उनके बीच चिह्न ठहरें; कि वे जानें कि मैं यहोवा उनका पवित्र करने वाला हूं'' (यहेजकेल 20:10-12)।

इसमें व्यवस्थाविवरण 5:15 के मूसा के कथन का स्वर सुनाई देता है: ''और इस बात का स्मरण रखना कि मिस्र देश में तू आप दास था, और वहां से तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे बलवन्त हाथ और बढ़ायी हुई भुजा के द्वारा निकाल लाया; इस कारण तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे विश्रामदिन मानने की आज्ञा देता है।'' सब्त का दिन जो इस्राएलियों के मिसर से निकलने के बाद सीनै पर्वत पर प्रसिद्ध हुआ था, परमेश्वर और इस्राएलियों के बीच एक चिह्न और वाचा थी (निर्गमन 31:13, 16, 17; यहेजकेल 20:12)।

परमेश्वर ने सीनै पर्वत पर सब्त के प्रकाशन की तैयारी के लिए इस्राएलियों को छठे दिन अतिरिक्त मन्ना दिया (निर्गमन 16:23-30)। इस्राएलियों को प्रत्येक छठे दिन सातवें दिन के लिए मन्ना इकट्ठा करना होता था और सब्त के दिन अपने निवास स्थानों पर रहना होता था। मूसा ने समझाया था, ''देखो, यहोवा ने जो तुम को विश्राम का दिन दिया है, इसी कारण वह छठवें दिन को दो दिन का भोजन तुम्हें देता है; इसलिए तुम अपने-अपने यहां बैठे रहना, सातवें दिन कोई अपने स्थान से बाहर न जाना'' (निर्गमन 16:29)।

दस आज्ञाओं में सब्त का दिन

दस आज्ञाओं में सब्त के दिन के तीन महत्वपूर्ण पहलू दिए गए हैं (निर्गमन 20:8-11)।

(1) सब्त का दिन पूर्ण विश्राम का दिन होता था। इस्राएलियों के सदस्यों, नौकरों, जानवरों, अतिथियों, या उनमें पाए जाने वाले किसी भी व्यक्ति द्वारा कोई काम नहीं किया जाना था (आयतें 8-10; व्यवस्थाविवरण 5:12-15)।

(2) परमेश्वर ने सब्त के रूप में सातवें दिन को विश्राम का दिन चुना, क्योंकि उसने सातवें दिन विश्राम किया था। ''क्योंकि छह दिन में यहोवा ने आकाश, और पृथ्वी, और समुद्र और जो कुछ उनमें हैं, सब को बनाया, और सातवें दिन विश्राम किया; इस कारण यहोवा ने विश्रामदिन को आशीष दी और उसको पवित्र ठहराया'' (निर्गमन 20:11)।

(3) सब्त का दिन इस्राएलियों के लिए एक यादगारी दिन था, अर्थात विश्राम तथा परमेश्वर द्वारा मिसर की दासता से उन्हें निकालने का जश्न मनाने का दिन। ''और इस बात को स्मरण रखना कि मिस्र देश में तू आप दास था, और वहां से तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा निकाल लाया; इस कारण तेरा परमेश्वर यहोवा

तुझे विश्रामदिन मानने की आज्ञा देता है" (व्यवस्थाविवरण 5:15)।

परमेश्वर ने सातवां दिन इसलिए चुना क्योंकि उसने उस दिन आराम किया था, परन्तु उसमें कहीं भी सृष्टि के सम्मान में यादगारी दिन या सातवें दिन अपने आराम करने के लिए यादगारी दिन के रूप में इसे अलग (पवित्र बनाने) करने की आज्ञा नहीं दी थी। इस्राएल के लिए सब्त के दिन को आराधना के विशेष दिन के बारे में कुछ नहीं कहा गया।

इस तथ्य का कि परमेश्वर ने यह दिन अपने लोगों को दासता से निकालने को स्मरण रखने के लिए दिया, अर्थ है कि मिसर की दासता से छूटने से पहले यह दिन नहीं दिया गया था। फिर, मिसर में गुलाम रहने के समय चार सौ वर्षों के दौरान तो वे निश्चय ही सब्त को नहीं मना सके होंगे (उत्पत्ति 15:13; प्रेरितों 7:6)।

क्या सब्त का दिन सृष्टि की रचना के समय दिया गया था?

क्या उत्पत्ति 2:1–3 यह सिखाता है कि परमेश्वर ने सृष्टि की रचना पूरी करने के समय सातवें दिन को मनुष्य जाति के लिए मनाने को अलग कर दिया था? पहली नज़र में, हो सकता है कि हम यही निष्कर्ष निकालें कि सब्त सृष्टि की रचना से ही था। परन्तु, ऐसा निष्कर्ष इस तथ्य को अनदेखा कर देता है कि परमेश्वर ने सब्त का दिन इस्राएलियों को मिसर की दासता से निकालने के बाद एक यादगारी दिन के रूप में दिया। इससे यह तथ्य भी अनदेखा हो जाता है कि मूसा ने सृष्टि की रचना के बहुत वर्ष बाद उत्पत्ति की पुस्तक लिखी थी।

अमेरिका में नागरिक अधिकारों के एक नेता मार्टिन लूथर किंग जूनियर जिसकी 1968 में हत्या कर दी गई थी, का जन्म दिन जनवरी के तीसरे सोमवार को मनाया जाता है। एक इतिहासकार ने किंग की जीवनी लिखते समय जनवरी 16, 1929 में उसका जन्म होने की बात लिख दी और फिर उसने यह टिप्पणी जोड़ दी कि किंग के जन्मदिन के सम्मान में एक विशेष दिन अलग से रखा गया था। उसे यह व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं थी कि नवम्बर 2, 1983 को रोनाल्ड रीगन ने किंग के जन्म दिन के सम्मान के लिए जनवरी के तीसरे सोमवार को राष्ट्रीय दिन बनाने के लिए एक बिल पर हस्ताक्षर किए थे।

इस जीवनी लेखक की तरह, मूसा भी पीछे की ओर देख रहा था। सृष्टि की रचना के बारे और सातवें दिन परमेश्वर के विश्राम करने की बात बताने के बाद, उसने फिर लिखा कि परमेश्वर ने उस दिन को विश्राम के दिन के रूप में अलग कर दिया था। उसने यह नहीं कहा कि उस समय भी यह दिन विश्राम के दिन के रूप में अलग किया गया था और न ही यह कहा कि उस समय इसे कोई और मनाता था। बाद में, मूसा ने लिखा कि परमेश्वर ने इस्राएलियों के मिसर से निकलने के बाद सीनै पर्वत पर विश्राम का दिन ठहराया (व्यवस्थाविवरण 5:15)। अन्य आयतें इसकी उस समय के रूप में पुष्टि करती हैं जब सब्त का दिन दिया और लागू किया गया था (नहेमायाह 9:13, 14; यहेजकेल 20:10–12)।

लिखने का यह ढंग पुराने नियम के अन्य भागों में भी मिलता है। उदाहरण के लिए, मूसा ने आदम और हव्वा के माता-पिता बनने से पहले ही विस्तार से बताया कि पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर (उत्पत्ति 2:24) अपनी पत्नी से क्यों मिला रहेगा। आदम ने अपनी पत्नी को ''हव्वा'' कहा जिसका अर्थ है ''सब जीवित लोगों की माता'' जबकि उसने अभी तक किसी बच्चे को जन्म नहीं दिया था (उत्पत्ति 3:20)।

विभिन्न स्थानों को भी नाम देने से पहले, विशेष नामों से पुकारा गया है। उदाहरण के लिए, बेतेल को यह नाम देने से पहले भी (उत्पत्ति 28:19) ''बेतेल'' नाम के रूप में ही उल्लेखित किया गया है (उत्पत्ति 12:8; 13:3)। इसी प्रकार, ''बेर्शेबा'' (उत्पत्ति 21:31) को भी बेर्शेबा नाम दिए जाने से पहले ही इसके हवाले (उत्पत्ति 21:14), ''होर्मा'' का नाम दिए जाने से पहले (गिनती 21:3), होर्मा (गिनती 14:45), ''गिलगाल'' का नाम देने से पहले (यहोशू 5:9) गिलगाल (व्यवस्थाविवरण 11:30; यहोशू 4:19, 20), ''दान'' का नाम देने से पहले दान (व्यवस्थाविवरण 34:1; यहोशू 19:47; न्यायियों 18:29) और यरूशलेम (यहोशू 10:1) के कई हवाले हैं जबकि इसे अभी ''यबूस'' ही कहा जाता था (न्यायियों 19:10)।

सब्त का नियम दासता से निकलने के समय इस्राएल को दी गई दस आज्ञाओं का भाग था। मूसा ने ज़ोर देकर कहा था कि परमेश्वर ने यह वाचा किसी पिछली पीढ़ी के साथ नहीं बांधी थी (व्यवस्थाविवरण 5:1-3)। इस प्रकार सब्त का नियम इस्राएलियों के मिसर से निकलने तक न तो आदम और हव्वा को व न ही किसी अन्य को दिया गया था।

क्या सब्त का दिन आराधना के लिए दिया गया था?

उत्पत्ति की पुस्तक में यह नहीं कहा गया कि परमेश्वर ने सब्त का दिन आराधना के विशेष दिन के लिए अलग करके रखा था। परमेश्वर ने काम समाप्त किया था, परन्तु उसने सातवें दिन आराधना करने की आज्ञा नहीं दी थी (उत्पत्ति 2:1-3)। दस आज्ञाएं देते हुए परमेश्वर ने इस्राएलियों को विश्राम करने और यह स्मरण रखने का निर्देश दिया कि परमेश्वर ने उन्हें मिसरियों की दासता से छुड़ाया था। परन्तु आराधना के बारे में कुछ नहीं कहा था (निर्गमन 20:8-10; व्यवस्थाविवरण 5:12-15)।

सब्त के दिन आराधना के सम्भावित हवाले केवल यहेजकेल और यशायाह में ही मिलते हैं। यहेजकेल 46 अध्याय यहूदी युग में आराधना के दिन की बात नहीं करता बल्कि यह कविता की भाषा में यहेजकेल की भविष्यवाणी का दर्शन है। यह मसीही आराधना का हवाला नहीं है। यदि इससे यह सिद्ध होता है कि मसीही लोगों को सब्त के दिन आराधना करनी चाहिए तो इसका अर्थ है कि मसीही लोगों को मन्दिर में आराधना करनी चाहिए (आयत 1), नये चांद मनाने चाहिए (आयतें 1, 2), याजकों के द्वारा आराधना करनी चाहिए (आयत 2), होम बलि भेंट करनी चाहिए (आयत 2-7), यहूदी पर्व मनाने चाहिए (आयतें 9-12), प्रतिदिन के बलिदान भेंट करने चाहिए (आयतें 13-15) और छुट्टी का वर्ष मनाना चाहिए (आयतें 16-18)।

यहेजकेल के दर्शन को यहूदी भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणी की सांकेतिक भाषा के संदर्भ में समझना चाहिए जिन्होंने मसीही युग के व्यवहारों की परछाईं के लिए (इब्रानियों 10:1) यहूदी व्यवहारों का इस्तेमाल किया था। इसी तरह, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक मसीही आराधना के संकेतों के रूप में यहूदी आराधना के तत्वों का इस्तेमाल करती है।

यशायाह 66 यह नहीं कहता कि परमेश्वर की आराधना केवल सब्त के दिन ही होनी थी। वहां तो यह लिखा है कि "फिर ऐसा होगा कि एक नये चांद से दूसरे नए चांद के दिन तक और एक विश्राम दिन से दूसरे विश्राम दिन तक समस्त प्राणी मेरे साम्हने दण्डवत करने को आया करेंगे" (आयत 23)। यशायाह यह नहीं कह रहा था कि लोग हर सब्त के दिन परमेश्वर के सामने दण्डवत करेंगे। "एक विश्राम दिन से दूसरे विश्राम दिन तक" कहने का उसका अर्थ था कि वे सब्तों के बीच आने वाले दिनों में भी आराधना करेंगे।

इसकी तुलना किसी पुरुष के किसी स्त्री से यह कहने से की जा सकती है, "यदि तुम मुझ से शादी करती हो, तो मैं तुमसे नये वर्ष से नये वर्ष तक और रविवार से रविवार तक एक जैसा प्रेम करूंगा।" उसके कहने का अर्थ यह नहीं है कि वह केवल उसे उन दिनों में ही प्रेम करेगा बल्कि वह उसे उन दिनों और उनके बीच के दिनों में भी प्रेम करेगा। यशायाह की भविष्यवाणी का अर्थ था कि परमेश्वर का आदर होता रहना था।

यदि इस पद से यह शिक्षा मिलती है कि मसीही युग में सब्त का दिन मनाया जाना चाहिए, तो इससे यह भी शिक्षा मिलती है कि मसीही लोगों को यहूदियों के नए चांद के विशेष दिन भी मनाने चाहिए। वह यह नहीं कहता कि लोग नये चांद के दिनों को मनाएंगे, सब्त के दिन विश्राम करेंगे या प्रत्येक सब्त के दिन आराधना करेंगे। बल्कि इसमें कहा गया है कि वे परमेश्वर के सामने "दण्डवत" करेंगे, जो इस बात का संकेत है कि वे हर सप्ताह परमेश्वर को सम्मान देंगे और उसकी बात मानेंगे।

परमेश्वर ने सब्त को "पवित्र" मानने की आज्ञा दी थी, जिसका अर्थ था कि इसे "अलग" रखा जाए (निर्गमन 20:8; 31:14, 15)। इसे अलग कैसे रखना था इस बात को आज्ञा में विस्तारपूर्वक समझाया गया था:

> "छः दिन तो तू परिश्रम करके अपना सब काम काज करना; परन्तु सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिए विश्रामदिन है। उसमें न तो तू किसी भांति का काम काज करना, और न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा दास, न तेरी दासी, न तेरे पशु, न कोई परदेशी जो तेरे फाटकों के भीतर हो" (निर्गमन 20:9, 10)।

हम यह भी पढ़ते हैं:

> "छः दिन तो काम काज किया जाए, पर सातवां दिन परमविश्राम का दिन और यहोवा के लिए पवित्र है; इसलिए जो कोई विश्राम के दिन में कुछ काम काज करे वह निश्चय मार डाला जाए" (निर्गमन 31:15)।

सब्त के दिन को पवित्र मानने का ढंग काम करना बन्द करके इसे विश्राम के दिन के रूप में मनाना था। इस्राएल में प्रतिदिन का काम काज, आराधना और बलिदान, विशेष रूप से सब्त से नहीं जुड़े थे।

इस्राएलियों को सब्त के दिन मण्डली के रूप में आराधना के लिए इकट्ठा होने की आज्ञा नहीं दी गई थी। परम्परागत ''सब्त के दिन की यात्रा'' (एक मील के लगभग 3/5 भाग की सीमित यात्रा) के कारण, केवल यरूशलेम में या उसके आस पास रहने वाले लोग ही सब्त के दिन आराधना के लिए इकट्ठे हो पाते होंगे।

परमेश्वर द्वारा इस्राएलियों को दस आज्ञाएं दिए जाने के कई वर्ष बाद तक सब्त का दिन लोगों के इकट्ठे होने का दिन नहीं था। मन्दिर गिराए जाने और बन्दी यहूदियों को बाबुल में ले जाने के समय, पवित्र शास्त्र को सार्वजनिक रूप में पढ़ने के लिए आराधनालय बनाए गए थे। ''निर्वासन के दौरान आराधनालय (सिनागोग) बढ़ने के साथ सब्त विश्राम के दिन के साथ-साथ आराधना और व्यवस्था के अध्ययन का दिन भी बन गया था।''[1]

इससे पहले, इस्राएली लोग केवल यरूशलेम में ही आराधना करते थे, जिसे परमेश्वर ने उनकी आराधना के लिए ठहराया था।[2] उन्हें बताया गया था:

> और सावधान रहना कि तू अपने होमबलियों को हर एक स्थान पर जो देखने में आए न चढ़ाना; परन्तु जो स्थान तेरे किसी गोत्र में यहोवा चुन ले वहीं अपनी होमबलियों को चढ़ाया करना, और जिस-जिस काम की आज्ञा मैं तुझ को सुनाता हूं उसको वहीं करना (व्यवस्थाविवरण 12:13, 14)।

लैव्यव्यवस्था 23:2 में एक ''पवित्र सभा'' का उल्लेख है। लोग कहां और क्यों इकट्ठे होते थे इस बारे में कुछ नहीं बताया गया। सब्त के दिन की परम्परा पूरी जाति या बड़े नगर में किसी इकट्ठ को रोकती होगी। सब्त को मानने के बारे में इस्राएलियों के लिए दी गई आज्ञा में कहा गया था, ''तुम अपने-अपने यहां बैठे रहना, सातवें दिन कोई अपने स्थान से बाहर न जाना'' (निर्गमन 16:29ख)। इस आज्ञा से उस घराने के लोगों के इकट्ठा होने पर पाबंदी लग जाती थी। लैव्यव्यवस्था 23:3 का ''पवित्र सभा'' ''सम्पूर्ण विश्राम'' के विपरीत है, जिसका अर्थ यह होना चाहिए कि पवित्र सभा विश्राम के लिए इकट्ठा होने के लिए घराने का समय था।

यीशु और सब्त

यीशु का जन्म व्यवस्था के अधीन हुआ था (गलतियों 4:4)। इस कारण, उसने व्यवस्था की आज्ञाओं को माना जिसमें सब्त भी शामिल है।

जब सब्त के दिन यीशु ने किसी को चंगा किया, तो यहूदी परेशान हो गए थे क्योंकि वह उनकी परम्पराओं के अनुसार सब्त को पूरा नहीं करता था। सब्त का प्रभु होने के कारण, वह सातवें दिन के विश्राम के अभिप्राय को समझता था। सब्त के दिन अपने चेलों

को गेहूं की बालें लेकर खाने की अनुमति देकर (मत्ती 12:1–8; मरकुस 2:23–28; लूका 6:1–5), वह "सब्त पर अपने अधिकार का दावा कर रहा था। इस दिन को फरीसी नहीं, बल्कि वह ही उचित ढंग से चला सकता था।"[3]

सब्त के दिन, यीशु ने एक सूखे हाथ वाले आदमी को (मत्ती 12:10–13; मरकुस 3:1–5; लूका 6:6–10); एक कुबड़ी स्त्री को (लूका 13:11–16); जलन्धर रोग के एक व्यक्ति को (लूका 14:1–5); बेतसहदा के कुण्ड पर अठत्तीस वर्ष के बीमार को, जिसे उसने सब्त के दिन अपनी खाट उठाकर ले जाने के लिए कहा था (यूहन्ना 5:1–18; 7:19–23) और एक अन्धे आदमी को (यूहन्ना 9:1–7) भी चंगा किया था। उसने अपने आलोचकों से पूछा था कि सब्त के दिन भला करना सही है या गलत (मत्ती 12:12)। उसने ऐलान किया कि सब्त का दिन मनुष्य के लिए बनाया गया था न कि मनुष्य को सब्त के लिए (मरकुस 2:27)।

यीशु ने न केवल सब्त के दिन लोगों को चंगा ही किया बल्कि उसने सातवें दिन यहूदियों के आराधनालयों में शिक्षा भी दी थी (मरकुस 1:21; 6:2; लूका 4:16, 31; 6:6; 13:10)। परन्तु, यीशु और यहूदियों में विवाद इसलिए पैदा हुआ क्योंकि उसने फरीसियों की ठहराई हुई परम्पराओं को तोड़ा था। "फरीसी लोग बताने की कोशिश करते थे कि सब्त के दिन क्या किया जा सकता है और क्या नहीं। मिश. *शब्बथ* vii. 2 सब्त के दिन उनतालीस 'प्रमुख कार्यों' की पाबंदी की सूची देती है...।"[4]

यीशु और उसके चेलों ने फरीसियों द्वारा दी गई आज्ञाओं की सूची का उल्लंघन किया था: अनाज की बालें तोड़ने की मनाही थी (मरकुस 2:23, 24), ऐसे व्यक्ति की सहायता या चंगाई नहीं की जाती थी जिसके मरने का खतरा नहीं होता था (मरकुस 3:1), और चीज़ें नहीं ले जाई जाती थीं (यूहन्ना 5:9, 10)।[5] एक अवसर पर ऐसे मामले सामने आने पर, यीशु का उत्तर था कि वह सब्त के दिन काम करता है और उसका पिता भी काम करता है (यूहन्ना 5:17)।

क्या यीशु ने यह संकेत दिया कि मसीही लोगों के लिए सब्त का दिन मनाना आवश्यक था? कुछ लोग दावा करते हैं कि अपने चेलों से कि "प्रार्थना किया करो; कि तुम्हें जाड़े में या सब्त के दिन भागना न पड़े" (मत्ती 24:20) कहने का उसका यही तात्पर्य था। यीशु ने यह विस्तार से नहीं बताया कि उसने ऐसा क्यों कहा, सो हम केवल अनुमान ही लगा सकते हैं। क्या "सब्त के दिन की यात्रा" से सम्बन्धित परम्परा उन्हें किसी दूरी तक यात्रा करने से रोकती थी, या सब्त के दिन यरूशलेम के फाटक बन्द होने के कारण उनका बचाव नहीं होना था? एक कारण यह हो सकता है कि इस स्थिति में मसीही लोगों को गंभीर खतरा हो सकता था। यहूदी लोग किसी भी ऐसे व्यक्ति पर पथराव कर सकते थे जिसने सब्त के दिन बोझ उठाया हो, जैसे सब्त के दिन लकड़ियां उठाने वाले व्यक्ति को पत्थर मारकर मार दिया गया था (गिनती 15:32, 36)।

यहोवा यों कहता है, सावधान रहो, विश्राम के दिन कोई बोझ मत उठाओ; और

> न कोई बोझ यरूशलेम के फाटकों के भीतर ले आओ। विश्राम के दिन अपने अपने घर से भी कोई बोझ बाहर मत ले आओ और न किसी रीति का काम काज करो, वरन उस आज्ञा के अनुसार जो मैं ने तुम्हारे पुरखाओं को दी थी, विश्राम के दिन को पवित्र माना करो (यिर्मयाह 17:21, 22)।

यदि मसीहियों को सब्त के दिन या जाड़े में भागना पड़ता तो उनकी हालत और भी बुरी हो जानी थी। जाड़े के मौसम में सर्दी, वर्षा या शायद बर्फ भी पड़ सकती थी, जबकि सब्त के दिन की यहूदियों की परम्पराएं और व्यवस्था उन्हें रोक सकती थीं।

जाड़े में या सब्त के दिन भागने की समस्या के बारे में आर. सी. एच. लैंसकी का कहना था:

> ... फलस्तीनी जाड़े की सर्दी और नमी और यह सम्भावना कि "तुम्हारा भागना" उस मौसम में हो सकता है। या "सब्त" के दिन हो सकता है जब देश में कट्टर यहूदियों की भरमार हो, जो सब्त के सम्भावित अपवित्र करने की बात से उग्र हो जाते होंगे। यह विचार प्रमाण रहित है कि इस समय मसीही लोग यहूदी नियमों को मान रहे होंगे, जिसमें सब्त के सम्बन्ध में नियम ही शामिल है।[6]

डी. ए. कारसन ने लिखा है:

> इसका यह अर्थ न लिया जाए कि यीशु ने अपने चेलों को सिखाया कि किसी भी प्रकार की यात्रा, जिसमें सब्त के दिन की यात्रा से बचाव गलत भी शामिल था। वह यह सुझाव नहीं देता कि वे सब्त के दिन भागें न, परन्तु पहले से यह अनुमान लगाकर कि वे भागेंगे, वह उन्हें यह प्रार्थना करने का सुझाव देता है कि उनका भागना किसी और दिन हो। दूध पिलाने वाली माताएं (24:19) और सर्दी के मौसम की बरसातों और सर्दी (24:20क) के कारण सब्त के नियमों में रुकावट आ सकती थी और उनके प्राण की भी हानि हो सकती थी, क्योंकि शहर के फाटक बन्द होने थे, दुकानें बन्द होनी थी और सब्त के दिन जितनी यात्रा की अनुमति थी उससे अधिक चलने का प्रयास करने वाले के लिए अड़चन आनी थी।[7]

यद्यपि इस कथन से यह प्रमाणित किया जा सकता है कि यीशु ने संकेत दिया था कि मसीही लोगों को सब्त का दिन मनाना चाहिए, परन्तु ऐसे प्रमाण से केवल यही प्रमाणित होगा कि सब्त के दिन न कोई काम किया जाए और न ही कोई यात्रा। इससे यह प्रमाणित नहीं होगा कि मसीही लोगों को सब्त के दिन आराधना करनी चाहिए, क्योंकि यह कथन सब्त के दिन केवल यात्रा के बारे में है, आराधना के विषय में नहीं। फिर, इससे केवल इतना ही प्रमाणित होगा कि सब्त का दिन यहूदी मसीहियों के लिए ही था, अन्यजाति मसीहियों के लिए नहीं। सब्त का नियम यहूदियों की व्यवस्था का एक भाग था, न कि इस्राएल के बाहर

रहने वाले लोगों पर लागू व्यवस्था का।

सब्त का दिन सदा नहीं रहना था। इस्राएल के सम्बन्ध में होशे के द्वारा परमेश्वर ने भविष्यवाणी की ''और मैं उसके पर्व, नये चांद और विश्राम दिन आदि सब नियत समयों के उत्सवों का अन्त कर दूंगा'' (होशे 2:11)। हो सकता है रोमी सेना द्वारा इस्राएलियों को हराने और यरूशलेम के गिरने के समय यह भविष्यवाणी पूरी हो गई हो (70 ई.)।

प्रेरितों के काम में सब्त

प्रेरितों के काम के पहले तेरह अध्यायों में सब्त का एकमात्र उल्लेख ''सब्त के दिन की दूरी'' (प्रेरितों 1:12) नामक एक हवाले में है जो सब्त के दिन 3/5 मील से अधिक या विशेष परिस्थितियों में उससे दोगुनी दूरी की यात्रा न करने की यहूदियों की परम्परा थी। प्रेरितों के काम में या नये नियम की किसी दूसरी पुस्तक में ऐसा कोई और वाक्य नहीं है जो संकेत देता हो कि मसीही लोग सब्त के दिन विश्राम करते थे या आराधना के लिए इकट्ठे होते थे।

पौलुस सब्त के दिन आराधनालयों में प्रचार करता था, क्योंकि वह यहूदियों के मिलने का स्थान तथा दिन था (प्रेरितों 13:14, 42, 44; 16:13; 17:2; 18:4)। परन्तु, हमें ऐसा कोई संकेत नहीं मिलता कि वह सब्त के दिन कलीसिया के साथ मिलता हो या कलीसिया सब्त के दिन मिलती हो। सब्त के दिन मूसा और भविष्यवक्ताओं की पुस्तक से पढ़ने की यहूदी प्रथा के अनुमान लगाए जाते हैं (प्रेरितों 15:21; देखिए प्रेरितों 13:27)।

पौलुस और बरनबास यरूशलेम में प्रेरितों और प्राचीनों से यह जानने के लिए मिलने गए कि क्या अन्यजातियों के लिए यहूदी व्यवस्था को मानना आवश्यक है (प्रेरितों 15:1, 2)। यहूदियों से मसीही बने कुछ लोग, अन्यजातियों के विषय में दावा करते थे, ''कि उन्हें खतना कराना और मूसा की व्यवस्था को मानने की आज्ञा देनी चाहिए'' (प्रेरितों 15:5)। कुछ विचार-विमर्श के बाद, पतरस ने कहा, ''तो अब तुम क्यों परमेश्वर की परीक्षा करते हो ? कि चेलों की गरदन पर ऐसा जुआ रखो, जिसे न हमारे बापदादे उठा सके थे और न हम उठा सकते'' हैं (प्रेरितों 15:10)। पतरस ने अवश्य ही व्यवस्था और खतने के जुए की बात की होगी, जिसे कुछ खतना किए हुए मसीही अन्यजाति मसीहियों पर थोपने का प्रयास कर रहे थे।

यह जोर देने वालों के उत्तर में कि अन्यजातियों का खतना होना और मूसा की व्यवस्था को मानना आवश्यक है याकूब के सुझाव से लिखे पत्र में (प्रेरितों 15:5) कहा गया, ''हमने आज्ञा नहीं दी थी'' (प्रेरितों 15:24)। इसमें आगे कहा गया, ''पवित्र आत्मा को, और हम को ठीक जान पड़ा कि इन आवश्यक बातों को छोड़; तुम पर और बोझ न डालें'' (प्रेरितों 15:28)। व्यवस्था की कुछ ही बातों को मानने के लिए कहा गया था। उनमें खतना, पूरी व्यवस्था या सब्त के दिन को मानना शामिल नहीं था। यह स्पष्ट संकेत है कि प्रेरितों, यरूशलेम के प्राचीनों या पवित्र आत्मा ने अन्यजाति मसीहियों को न तो इस्राएल को दी परमेश्वर की पूरी व्यवस्था और न ही सब्त को मानने की आज्ञा दी थी। पौलुस और बरनबास अन्यजाति मसीहियों पर यहूदी परम्पराएं लागू करने का इन्कार करने के कारण निर्दोष ठहरे थे।

पौलुस के लेखों में सब्त

पौलुस ने अपने लेखों में इस बात की पुष्टि की कि व्यवस्था मिट चुकी है।[8] उसने यह भी संकेत दिया कि मसीही लोग विशेष दिनों और यहूदियों के सब्तों को मनाने के लिए बाध्य नहीं हैं।

गलतिया के मसीहियों के नाम पत्र लिखते हुए उसने कहा, ''कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से धर्मी नहीं ठहरेगा'' (गलतियों 2:16); ''मैं तो व्यवस्था के लिए मर गया'' (गलतियों 2:19); ''सो जितने लोग व्यवस्था के कामों पर भरोसा रखते हैं, वे सब स्राप के आधीन हैं'' (गलतियों 3:10); ''व्यवस्था के द्वारा परमेश्वर के यहां कोई धर्मी नहीं ठहरता'' (गलतियों 3:11); ''वह तो ... बाद में दी गई, कि उस वंश के आने तक रहे'' (गलतियों 3:19); ''हम अब शिक्षक [व्यवस्था] के आधीन न रहे'' (गलतियों 3:25); ''दासत्व [व्यवस्था] के जुए में फिर से न जुतो'' (4:21-31 के संदर्भ में गलतियों 5:1); ''तुम जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग और अनुग्रह से गिर गए हो'' (गलतियों 5:4); और ''तुम ... व्यवस्था के आधीन न रहे'' (गलतियों 5:18)।

इन कथनों के संदर्भ में, पौलुस ने लिखा, ''तुम दिनों और महीनों और नियत समयों और वर्षों को मानते हो। मैं तुम्हारे विषय में डरता हूं, कहीं ऐसा न हो, कि जो परिश्रम मैं ने तुम्हारे लिए किया है, व्यर्थ ठहरे'' (गलतियों 4:10, 11)। गलतियों की पुस्तक में पौलुस का केन्द्र बिन्दु यहूदी प्रथाएं थीं, इसलिए वह अवश्य ही किसी मूर्तिपूजक विशेष दिन की नहीं बल्कि यहूदी दिनों की ही बात कर रहा होगा।

''दिनों और महीनों और नियम समयों और वर्षों'' सम्भवतः यहूदी धार्मिक पर्वों को ही कहा गया है, क्योंकि गलतिया में पौलुस का विरोध करने वाले यहूदी मत से आने वाले लोग ही थे। यदि यह बात है, तो ''दिनों'' सब्तों और केवल एक दिन के लिए मनाए जाने वाले अन्य पर्वों को कहा गया हो सकता है, जबकि ''महीनों'' का अर्थ मासिक पर्व हो सकता है (जैसे नये चांद; देखिए गिनती 10:10)।[9]

> गलतिया में पाए जाने वाले संघर्ष के संदर्भ की दृष्टि में, कि जिन बातों को मानने के लिए गलतिया के लोग तैयार हो गए थे वे यहूदी दिन त्यौहार ही थे। ''दिनों'' सब्त के दिनों के साथ वे पर्व होंगे जो कैलेण्डर में विशेष तिथियों पर आते थे।[10]

पौलुस गलतिया के मसीहियों को याद दिला करवा रहा था कि वे व्यवस्था से छूट गए हैं और उन्हें यहूदियों के पवित्र दिन मनाने की आवश्यकता नहीं।

कुलुस्से की कलीसिया को भी उसने ऐसा ही निर्देश दिया:

> इसलिए खाने-पीने या पर्ब्ब या नए चान्द, या सब्तों के विषय में तुम्हारा कोई फैसला न करे। क्योंकि ये सब आनेवाली बातों की छाया हैं (कुलुस्सियों 2:16, 17क)।

मसीही व्यक्ति को किसी को भी खाने, पीने, पर्वों, विशेष दिनों या सब्त के दिनों को मानने के लिए न्याय नहीं करने देना चाहिए। इस सब को मानने का हमारा दायित्व यीशु ने क्रूस पर चढ़कर खत्म कर दिया है। वे तो केवल, ''स्वर्ग में की वस्तुओं के प्रतिरूप और प्रतिबिम्ब'' (इब्रानियों 8:5; देखिए 10:1) अर्थात यीशु द्वारा लाई जाने वाली वास्तविकताओं के आने तक मनाए जाने वाली सांकेतिक बातें थीं (कुलुस्सियों 2:17; देखिए इब्रानियों 9:9, 10)।

''विधियां'' (यू.: *dogmasin*) मिटा दी गई थीं (इफिसियों 2:15), और क्रूस पर जड़ दी गई थीं (कुलुस्सियों 2:14)। इन्हें फिर से लागू करने का प्रयास करने वाले, इनको पूरा करके धर्मी बनने की ताक में थे, जिससे कि पौलुस का परिश्रम व्यर्थ हो जाता।

सारांश

परमेश्वर को बार-बार यहूदियों को याद दिलाना पड़ा था कि वे सब्त के दिन काम न करें। परन्तु, सब्त के दिन आराधना या काम करने के बारे में मसीहियों को एक भी शब्द नहीं कहा गया। क्योंकि अन्यजाति लोग तो ऐसी विरासत से थे जिन्हें सब्त के मानने की बातों का ज्ञान नहीं था, इसलिए उन्हें सब्त के दिन आराधना करने और काम न करने के लिए सिखाना आवश्यक था। यह तथ्य कि नये नियम में कोई ऐसा निर्देश नहीं दिया गया था इस बात का प्रमाण है कि यहूदी सब्त का दिन उन पर लागू नहीं था, चाहे वह विश्राम के दिन के रूप में हो या आराधना के दिन के रूप में।

सब्त का दिन यहूदियों के लिए एक विशेष दिन था। उस दिन उन्हें कोई काम नहीं करना होता था, बल्कि विश्राम करना और यह स्मरण करना होता था कि कैसे परमेश्वर उन्हें मिसर की दासता से छुड़ाकर लाया था। यह परमेश्वर और इस्राएलियों के बीच एक चिह्न तथा वाचा थी। सब्त कभी भी अन्यजातियों के लिए नहीं था या उन्हें नहीं दिया गया, न ही मसीहियों के लिए कभी इसे मानने की आज्ञा थी। अब जबकि मसीह आ चुका है, मसीही लोग यीशु को स्मरण करने और यह कि उसने कैसे अपनी मृत्यु तथा पुनरुत्थान के द्वारा उन्हें मृत्यु से निकाला है, रविवार के दिन इकट्ठे होते हैं।

पाद टिप्पणियां

[1]जे. डी. डगलस, सं., *द न्यू इंटरनेशनल डिक्शनरी ऑफ़ द बाइबल,* सामा. संस्क. मैरिल सी. टैनी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: रिजेन्सी रैफरेंस लाइब्रेरी, ज़ोन्डर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1987) स्टीवन बरबस द्वारा ''सब्बथ'' शीर्षक से। [2]यूहन्ना 4:19-22 में कुएं पर सामरी महिला से यीशु की बातचीत से पता चलता है कि यहूदियों को परमेश्वर की इच्छा का पता था कि आराधना करने का स्थान यरूशलेम ही था। [3]जैक पी. लूइस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पार्ट 1, द लिविंग वर्ड कमैन्ट्री सीरीज़, सं. एवरट फर्ग्युसन (ऑस्टिन, टैक्स.: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 171. [4]*इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल इनसाइक्लोपीडिया,* सामा. संस्क. ज्योफरी डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: Wm. B. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 4:251 में जे. सी. मैकेन जूनियर, ''सब्बथ।'' [5]*थियोलोजिकल डिक्शनरी ऑफ द न्यू टैस्टामेन्ट,* सं. गरहर्ड किटल व गरहर्ड फ्रैड्रिक, trans.

और abr. ज्योफरी डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: Wm. B. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 991 में ई. लोह से, VII, *''sabbaton.''* [6]आर. सी. एच. लैंसकी, *द इंटरप्रिटेशन ऑफ़ सेंट मैथ्यू' स गॉस्पल,* (मिनियापोलिस, मिन.: आगसबरग पब्लिशिंग हाउस, 1943), 939–40. [7]डी. ए. कार्सन, सं. *फ्रॉम सब्बथ टू लॉर्ड'स डे: ए बिबलिकल, हिस्टोरिकल, एण्ड थियोलोजिकल इन्वेस्टिगेशन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: अकैडमी बुक्स, ज़ोन्डर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1982), 73–74. [8]व्यवस्था के मिटाये जाने पर चर्चा के लिए अगला पाठ देखिए। [9]डैनियल सी. अरिखेया जूनियर और यूजीन ए. नीडा, *ए ट्रांसलेटर'स हैंड बुक ऑन पॉल'स लैटर टू गलेशियन्स* (न्य यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसाइटीज़, 1976), 97. [10]जेम्स मोंटगोमरी बोयस और मैरिल सी. टैनी, सं. द एक्सपोज़िटर'स कमैन्ट्री, अंक 10, रोमन्स–गलेशियन्स सामा, सं. फ्रैंक ई. गेबलेन (ग्रैंड रैपिड्स मिशी. ज़ोन्डर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1976), 476.